Pg 1 Seema Aziz 5-8-2020

B.A Part I (H)

Home-Science

Q.1 दो से पाँच वर्ष तक के बच्चों के सामाजिक और संवेगात्मक विकास का वर्णन करें?

Ans 2 वर्ष से लेकर 5 वर्ष तक की अवस्था पूर्व पाठशालीय अवस्था कहलाती है। हमारे देश में इसमें बच्चे घर पर ही रहते हैं परन्तु विदेशों में इस अवस्था में किंडर गार्टन और नर्सरी स्कूल में रहते हैं। इस अवस्था से पूर्व बच्चे आत्मकेन्द्रित होते हैं इसलिए वे अन्य व्यक्तियों का ध्यान अपनी और आकृष्ट करना चाहते हैं। दो से पाँच वर्ष की उम्र तक बच्चों का सामाजिक विकास तीव्र गति से होता है।

मार्फी के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि इस समय बच्चा समुदाय में रहना पसन्द करता है और अपने साथी के प्रति सहानुभूति रखता है। इस अवस्था में वह सामूहिक जीवन का बहुत इच्छुक होता है। उसमें लड़ने झगड़ने की भी भावना विद्यमान रहती है। परन्तु नर्सरी स्कूल के बच्चों पर किये प्रयोगों या लड़ने-झगड़ने की भावना में कमी आ जाती है। दूसरे वर्ष में शिशु स्वयं

Fig(2) खाना कपड़े पहनाना तथा खिलौने के साथ खेलना सीख लेता है। वह अनुकरण के आधार पर दूसरा से अनेक बातें सीखने लगता है।

दूसरे वर्ष के बच्चे में द्वेष का विकास हो जाता है। वह दूसरे बच्चों से खिलौने छीनने का प्रयास करता है। वह ऐसा दूसरे बच्चों पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिये करता है। ऐसा करने से वह आनन्द का अनुभव करता है।

2 से 3 वर्ष के बच्चे अपने संरक्षकों की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं और ज़िद पर अड़ जाते हैं क्योंकि इस समय प्रतिरोध एवं निषेधात्मक प्रतिक्रियाओं का बाहुल्य रहता है। अनुभव बढ़ने के साथ-साथ ऐसी प्रतिक्रियाओं में कमी आ जाती है। चार वर्ष की अवस्था में वह सामाजिक अनुमोदन, प्रशंसा तथा मान्यता के लिए बड़ों की आज्ञा का पालन करने लगता है।

चार वर्ष की आयु में उसमें मित्रता एवं सामूहिक भावना अति प्रबल हो जाती है। इसलिए वह टोली बनाकर खेलना पसन्द करता है। वह धीरे-धीरे कार्यों में भी हाथ बँटाने लगता है। वह दूसरों के सुख में सुखी एवं दुःख में दुःखी होने लगता है। वह इस योग्य हो जाता है कि अपनी चीज़ को अपना समझने लगता है।

Scanned with CamScanner

Pg ③ चार वर्ष से पाँच वर्ष के बच्चे में हँसने, रोने एवं चिल्लाने की क्रियाएँ बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। चार वर्ष की अवस्था में अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए उनमें होड़ लग जाती है। इस अवस्था में उनमें प्रतियोगिता की भावना का विकास हो जाता है जिस कारण से वे अनेक सामाजिक कार्यों को करने को सक्रिय भाग लेने लगते हैं।

संवेगात्मक विकास → ब्रिजेज ने कुछ परीक्षणों के बाद बताया कि नवजात शिशु में सामान्य उत्तेजना पायी जाती है। जन्म के समय बालक उत्तेजित हो जाता है। जैसे-जैसे बच्चों का सामाजिक सम्पर्क एवं वातावरण बढ़ता है वैसे-वैसे उसके संवेगों का विकास होता है। डेढ़ वर्ष का बच्चा ईर्ष्या, बच्चों का बड़ों के प्रति लगाव, गुस्सा, डर प्रदर्शित करता है। 2 वर्ष की आयु में उसमें खुशी के संवेग उत्पन्न हो जाते हैं। वह उपर्युक्त संवेगों के साथ-साथ आनन्द का संवेग भी प्रकट करने लगता है। 5 वर्ष की आयु में बालकों में कष्ट तथा आनन्द के संवेगों के सारे अन्य संवेगात्मक अनुभूतियाँ यथा– आशा, स्पर्धा, निराशा, प्रसन्नता, व्यस्कों तथा बच्चों के प्रति आकर्षण आदि का विकास हो जाता है।

Scanned with CamScanner

3 वर्ष की आयु में भय का संवेग आ जाता है और भय के कारण वे माँ-बाप या बड़ों के पास छिप जाते हैं और आँखें बन्द कर लेते हैं। सामाजिक दायरा बढ़ने के साथ-साथ भय की मात्रा कम हो जाती है। बच्चों में भय का संवेग, अप्रिय अवस्थाओं एवं मानसिक तनाव के कारण होता है। 2-3 वर्ष में बच्चे अधिक डरते हैं, परन्तु यह डर पाँच वर्ष की आयु तक समाप्त हो जाता है

बच्चों कि बात न होने पर उनकी कोई वस्तु लेने पर एवं मारने पर उन्हें क्रोध आता है। 3 वर्ष की उम्र तक क्रोध की मात्रा अधिक रहती है। वह रोकर आपस में लड़कर गुस्सा दिखाता है। अपने कपड़े एवं बाल नोचता है। 6 वर्ष का बच्चा गुस्से में बहस भी करने लगता है। 3-4 वर्ष की उम्र में बच्चों में ईर्ष्या की भावना तीव्र होती है। लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में यह भाव अधिक होता है। 3 वर्ष की उम्र का बालक अपनी जिज्ञासा की पूर्ति प्रश्नों को पूछ कर करता है। 6 वर्ष के अन्त तक प्रश्न पूछना अपनी चरम सीमा तक पहुँच जाता है